11 अक्टू-07

प्रिय राजेन्द्र

सस्नेह आशीर्वाद

मै कुछ लिख रही हूँ - तुम्हीं बताओगे कैसा है। कुछ बच्चे भी काम कर रहे है - देखने पर ही पता चलेगा की क्या क्या हुआ है।

बच्चों में कविता दोबारा से ललक जगी है तुम्हारे कारण - दशहरा की छुट्टियों मे कुछ कार्य कर पाऊँगी।

घर में जो पढ़ने आते है उन्होंने भी तुकबन्दी करी है - मेरी एक छात्रा ममता ने कुसुमलता सिंह की एक छोटी सी जिसमें (7) कहानियां थी - उसने अच्छी समीक्षा करके उसके पर भेजी थी।

शेष सब कुशल है एक हस्त लिखित त्यार कर रही हूँ - तुम्हारे लिये।

सस्नेह बना रहे,

बिमला [illegible]

11/अक्टू 07